Dated - 22/08/2020

B.A Part 1 (H) Philosophy

डॉ० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

शंकर का माया-विचार

शंकर ने माया को ईश्वर की शक्ति कहा है, जिसके माध्यम से ईश्वर अनन्तरूपात्मक जगत की सृष्टि करता है। शंकर के अनुसार ब्रह्म एवं माया के बीच तादात्म्य संबंध है। शंकर ने माया की विशेषताओं की चर्चा करते हुए कहा है कि माया भौतिक एवं जड़ है, परन्तु न तो सत् है और न स्वतंत्र है। माया ब्रह्म की अभिन्न शक्ति है। यह ब्रह्म पर आश्रित है, पर उससे अपृथक है। माया अनादि है, शान्त है, जिसे ब्रह्म ज्ञान द्वारा ही अंत किया जा सकता है। यह भाव रूप है, किन्तु सत् नहीं है। माया सद् निर्वचनीय है। माया सत् नहीं है क्योंकि ब्रह्म से भिन्न इसकी कोई सत्ता नहीं है। ~~माया~~ असद् भी नहीं है, क्योंकि इसकी प्रतीति होती है। यह सत् और असत् दोनों नहीं है, क्योंकि सत् और असत् प्रकाश और अंधकार के समान एक साथ नहीं रह सकते। माया अध्यास है। यह भ्रान्ति या भ्रम है। यह किसी वस्तु यानि (रज्जु) पर किसी अन्य वस्तु (सर्प) का अध्यास आरोपित करती है। माया में दो प्रकार की शक्तियाँ हैं, एक आवरण शक्ति तथा दूसरा विक्षेप शक्ति। इन्हीं दोनों शक्तियों से माया किसी वस्तु पर दूसरी वस्तु का आवरण डाल देती है, जिससे उस वस्तु का मिथ्या ज्ञान होता है। माया ज्ञान निरस्या है अर्थात अधिष्ठान के ज्ञान से इसका निरास बाध या निवृति हो जाती है, जैसे रस्सी के ज्ञान से रस्सी में साँप की और ब्रह्मज्ञान से जगत-प्रपंच की। माया विवर्त है। यह अध्यास मात्र है। रज्जु भ्रम में भी सर्प के रूप में परिवर्तित नहीं होता। केवल प्रतीतिमात्र होती है। माया का आश्रय और विषय ब्रह्म ही है। जिस प्रकार आकाश तल मलिनता से या रज्जु सर्प से अलिप्त है, उसी प्रकार ब्रह्म माया से सर्वदा और सर्वथा अलिप्त है। डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार (i) विश्व स्वतः अपनी व्याख्या करने में असमर्थ है, जिसके फलस्वरूप विश्व का परतंत्र रूप दीख पड़ता है, जिसकी व्याख्या माया के द्वारा हुई है। (ii) ब्रह्म और जगत के संबंध की व्याख्या के लिए माया के द्वारा हुई है। (iii) ब्रह्म विश्व का कारण कहा जाता है क्योंकि विश्व ब्रह्म पर आरोपित किया गया है, विश्व जो ब्रह्म पर आश्रित है माया कहा जाता है। (iv) ब्रह्म का जगत में दिखाई पड़ना भी माया कहा जाता है। (v) ईश्वर में अपनी अभिव्यक्ति की शक्ति निहित है जिसे माया कहा जाता है। (vi) ईश्वर ~~की~~ शक्ति का रूपान्तर विश्व के रूप में होता है, जिसे माया कहा जाता है। =X=